उच्च शिक्षा के शिक्षकों और छात्रों का चैट जीपीटी के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन

निकिता मणि त्रिपाठी

https://doi.org/ 10.61410/had.v21i2.303

सार

प्रस्तुत अध्ययन उच्च शिक्षा के संदर्भ में शिक्षकों एवं स्नातकोत्तर छात्रों के चैट जीपीटी के प्रति दृष्टिकोण का विश्लेषण करता है। वर्तमान डिजिटल युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित तकनीकों का शिक्षा क्षेत्र में तेजी से विस्तार हो रहा है, जिसमें चैट जीपीटी एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक उपकरण के रूप में उभरकर सामने आया है। यह अध्ययन वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध पर आधारित है तथा मात्रात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है। इस हेतु 100 उत्तरदाताओं (40 शिक्षक एवं 60 छात्र) से मानकीकृत स्केल ATCGPTS-TKGA के माध्यम से डेटा एकत्र किया गया।

अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि अधिकांश उत्तरदाताओं का चैट जीपीटी के प्रति दृष्टिकोण सकारात्मक है। लगभग 80% उत्तरदाताओं ने इसकी सहजता, उपयोगिता एवं परिचय को स्वीकार किया। लगभग 75% उत्तरदाताओं ने कक्षा में इसके एकीकरण तथा समय-बचत में इसकी उपयोगिता को स्वीकार किया। हालाँकि, अध्ययन में नैतिकता, विश्वसनीयता एवं आलोचनात्मक सोच से संबंधित कुछ चिंताएँ भी सामने आईं। उत्तरदाताओं ने इस बात पर बल दिया कि चैट जीपीटी पर अत्यधिक निर्भरता छात्रों की मौलिक सोच एवं रचनात्मकता को प्रभावित कर सकती है तथा अकादमिक ईमानदारी के लिए चुनौती उत्पन्न कर सकती है। फिर भी, कुल मिलाकर 52% उत्तरदाताओं का दृष्टिकोण अत्यधिक सकारात्मक पाया गया, जो इस तकनीक की व्यापक स्वीकृति को दर्शाता है।

अंततः, अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि चैट जीपीटी उच्च शिक्षा में एक प्रभावी सहायक उपकरण के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक सुलभ, संवादात्मक एवं छात्र-केंद्रित बनाता है। तथापि, इसके उपयोग में संतुलन, नैतिकता एवं विवेक बनाए रखना आवश्यक है, ताकि यह तकनीक शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो सके।

मुख्य शब्द: चैट जीपीटी, उच्च शिक्षा, शिक्षकों का दृष्टिकोण, छात्रों का दृष्टिकोण, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया, डिजिटल शिक्षा, शैक्षणिक उत्पादकता

प्रस्तावना

वर्तमान युग को ज्ञान, सूचना और प्रौद्योगिकी का युग कहा जाता है। विज्ञान एवं तकनीक में तीव्र प्रगति ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है, जिनमें शिक्षा का क्षेत्र विशेष रूप से उल्लेखनीय है। शिक्षा, जो कभी केवल कक्षा-कक्ष, पुस्तकों और शिक्षक-केंद्रित पद्धति तक सीमित थी, आज डिजिटल माध्यमों,

- शोध छात्रा, महाकौशल विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश

ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) जैसे अत्याधुनिक तकनीकी साधनों के माध्यम से निरंतर विकसित हो रही है। उच्च शिक्षा प्रणाली में यह परिवर्तन और भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जहाँ विद्यार्थियों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी, नवाचारी और तकनीकी रूप से दक्ष बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

उच्च शिक्षा का उद्देश्य केवल अकादमिक ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना, उनमें आलोचनात्मक चिंतन, तार्किक विश्लेषण, समस्या-समाधान क्षमता तथा रचनात्मक सोच का विकास करना भी है। बदलते समय की माँग के अनुरूप उच्च शिक्षा संस्थानों को अपनी शिक्षण पद्धतियों में निरंतर सुधार करना पड़ रहा है। इसी संदर्भ में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित उपकरणों का उपयोग एक महत्वपूर्ण नवाचार के रूप में उभरा है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का तात्पर्य ऐसी तकनीक से है, जो मशीनों को मानव जैसी सोचने, समझने और निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है। शिक्षा के क्षेत्र में एआई का उपयोग व्यक्तिगत अधिगम (Personalized Learning), स्वचालित मूल्यांकन, ऑनलाइन सहायता और शैक्षणिक अनुसंधान में व्यापक रूप से किया जा रहा है। इन्हीं एआई आधारित उपकरणों में से एक प्रमुख और चर्चित नाम **चैट जीपीटी (ChatGPT)** है, जिसे OpenAI द्वारा विकसित किया गया है।

चैट जीपीटी एक ऐसा उन्नत भाषा मॉडल है, जो प्राकृतिक भाषा को समझकर मानव-सदृश उत्तर देने में सक्षम है। यह विद्यार्थियों और शिक्षकों दोनों के लिए एक सहायक शैक्षणिक साधन के रूप में सामने आया है। उच्च शिक्षा में इसके उपयोग ने सीखने और सिखाने की पारंपरिक पद्धतियों को चुनौती दी है और उन्हें अधिक संवादात्मक, लचीला एवं तकनीक-आधारित बनाया है। छात्र इसका उपयोग विषय-वस्तु को समझने, असाइनमेंट तैयार करने, परीक्षा की तैयारी करने, नोट्स बनाने और शोध कार्यों में प्रारंभिक सहायता प्राप्त करने के लिए कर रहे हैं।

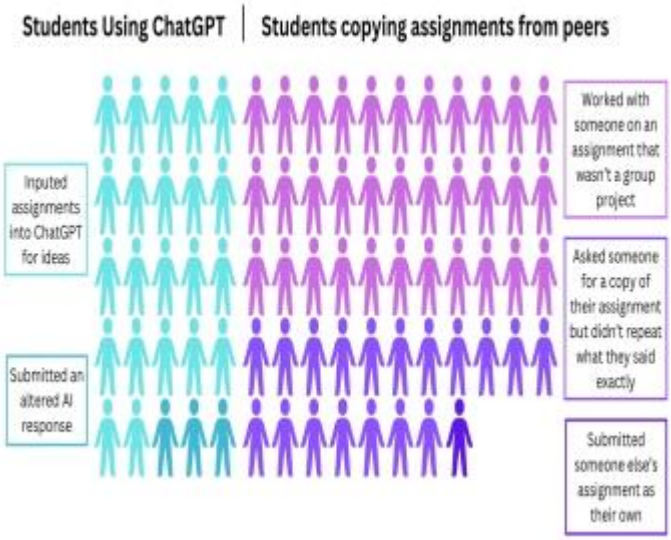

दूसरी ओर, शिक्षक भी चैट जीपीटी का प्रयोग पाठ योजना निर्माण, शिक्षण सामग्री विकसित करने, उदाहरण तैयार करने, मूल्यांकन प्रश्नों के निर्माण तथा शोध लेखन में सहायक उपकरण के रूप में करने लगे हैं। इससे शिक्षकों का समय बचता है और वे विद्यार्थियों के साथ अधिक सार्थक संवाद स्थापित कर पाते हैं। इस प्रकार, चैट जीपीटी ने शिक्षक और छात्र दोनों की भूमिकाओं को एक नए सहयोगात्मक रूप में परिवर्तित किया है।

हालाँकि, जहाँ एक ओर चैट जीपीटी को शिक्षा के लिए एक उपयोगी तकनीकी नवाचार माना जा रहा है, वहीं दूसरी ओर इसके उपयोग को लेकर कई प्रश्न और चिंताएँ भी उत्पन्न हो रही हैं। यह आशंका व्यक्त की जा रही है कि कहीं विद्यार्थी इस तकनीक पर अत्यधिक निर्भर न हो जाएँ, जिससे उनकी मौलिक सोच, लेखन क्षमता और रचनात्मकता प्रभावित हो सकती है। इसी प्रकार, अकादमिक ईमानदारी, नकल (Plagiarism) और मूल्यांकन की निष्पक्षता जैसे मुद्दे भी शिक्षकों और शैक्षणिक संस्थानों के सामने चुनौती के रूप में उभर रहे हैं।

भारत जैसे विकासशील देश में, जहाँ उच्च शिक्षा प्रणाली विविधताओं से भरी हुई है, चैट जीपीटी जैसी तकनीक का प्रभाव और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। यह तकनीक ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के बीच शैक्षणिक अंतर को कम करने में सहायक हो सकती है, क्योंकि यह सभी को समान रूप से जानकारी और मार्गदर्शन उपलब्ध कराती है। साथ ही, भाषा संबंधी बाधाओं को दूर करने में भी यह उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

इस परिप्रेक्ष्य में यह आवश्यक हो जाता है कि उच्च शिक्षा के शिक्षकों और छात्रों के चैट जीपीटी के प्रति दृष्टिकोण का गहन अध्ययन किया जाए। यह समझना महत्वपूर्ण है कि वे इस तकनीक को किस रूप में देखते हैं—एक अवसर के रूप में या एक चुनौती के रूप में। उनके अनुभव, अपेक्षाएँ और चिंताएँ ही यह निर्धारित करेंगी कि भविष्य में उच्च शिक्षा में चैट जीपीटी की भूमिका कैसी होगी।

अतः यह अध्ययन "उच्च शिक्षा के शिक्षकों और छात्रों का चैट जीपीटी के प्रति दृष्टिकोण" विषय पर केंद्रित है। इस भूमिका के माध्यम से अध्ययन की आधारभूमि तैयार की गई है, जो आगे के अध्यायों में विस्तृत चर्चा, विश्लेषण और निष्कर्षों का मार्ग प्रशस्त करेगी।

1.1 चैट जीपीटी का उद्भव और महत्व

चैट जीपीटी का उद्भव कृत्रिम बुद्धिमत्ता और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण के क्षेत्र में हुई तीव्र प्रगति का परिणाम है। यह एक ऐसा एआई आधारित उपकरण है, जो मानव भाषा को समझने, विश्लेषण करने और सुसंगत उत्तर प्रदान करने में सक्षम है। शिक्षा के क्षेत्र में इसके आगमन ने सीखने और सिखाने की प्रक्रिया को अधिक सरल, त्वरित और प्रभावी बना दिया है।

उच्च शिक्षा में चैट जीपीटी का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि यह छात्रों को आत्मनिर्भर सीखने में सहायता करता है। छात्र किसी भी समय अपने संदेह दूर कर सकते हैं, विषय को विभिन्न दृष्टिकोणों से समझ सकते हैं और जटिल अवधारणाओं को सरल भाषा में ग्रहण कर सकते हैं। इससे सीखने की प्रक्रिया निरंतर और स्व-नियंत्रित बनती है।

शिक्षकों के लिए चैट जीपीटी एक सहायक उपकरण के रूप में कार्य करता है। यह शिक्षण सामग्री तैयार करने, उदाहरण देने, केस स्टडी विकसित करने और मूल्यांकन प्रश्नों के निर्माण में सहायक सिद्ध होता है। इसके माध्यम से शिक्षक अपने समय और ऊर्जा का बेहतर उपयोग कर पाते हैं। हालाँकि, चैट जीपीटी का महत्व केवल सुविधा तक सीमित नहीं है। यह उच्च शिक्षा में नवाचार, रचनात्मकता और तकनीकी दक्षता को भी बढ़ावा देता है। यदि इसका उपयोग विवेकपूर्ण ढंग से किया जाए, तो यह शिक्षा की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार कर सकता है।

1.2 शिक्षकों का दृष्टिकोण

उच्च शिक्षा के शिक्षकों का चैट जीपीटी के प्रति दृष्टिकोण मिश्रित पाया जाता है। एक ओर शिक्षक इसे एक उपयोगी सहायक उपकरण मानते हैं, जो शिक्षण प्रक्रिया को सरल और प्रभावी बनाता है, वहीं दूसरी ओर वे इसके संभावित दुष्प्रभावों को लेकर सतर्क भी हैं।

कई शिक्षक मानते हैं कि चैट जीपीटी के माध्यम से वे छात्रों को बेहतर मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं। यह विशेष रूप से तब उपयोगी होता है जब कक्षा में छात्रों की संख्या अधिक हो और व्यक्तिगत ध्यान देना कठिन हो।

इसके विपरीत, कुछ शिक्षक यह चिंता व्यक्त करते हैं कि कहीं छात्र इस तकनीक पर अत्यधिक निर्भर न हो जाएँ। इससे छात्रों की स्वयं सोचने, लिखने और विश्लेषण करने की क्षमता प्रभावित हो सकती है। इसके अतिरिक्त, मूल्यांकन की निष्पक्षता और अकादमिक ईमानदारी भी शिक्षकों के लिए चिंता का विषय है।

कुल मिलाकर, शिक्षकों का दृष्टिकोण यह दर्शाता है कि वे चैट जीपीटी को पूर्ण विकल्प नहीं, बल्कि एक सहायक साधन के रूप में स्वीकार करना चाहते हैं।

1.3 छात्रों का दृष्टिकोण

छात्रों के बीच चैट जीपीटी के प्रति दृष्टिकोण अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक है। अधिकांश छात्र इसे एक मित्रवत और सुलभ शैक्षणिक सहायक के रूप में देखते हैं। यह उन्हें बिना झिझक प्रश्न पूछने और तुरंत उत्तर प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है।

ग्रामीण एवं कमजोर पृष्ठभूमि के छात्रों के लिए यह तकनीक विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध हो सकती है, क्योंकि यह उन्हें समान शैक्षणिक संसाधनों तक पहुँच प्रदान करती है। छात्रों का मानना है कि चैट जीपीटी से उनकी समझ, आत्मविश्वास और शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार होता है।

हालाँकि, कुछ छात्र यह भी स्वीकार करते हैं कि अत्यधिक निर्भरता उनकी रचनात्मकता को प्रभावित कर सकती है। फिर भी, अधिकांश छात्रों का दृष्टिकोण इसे सीखने की प्रक्रिया को सरल बनाने वाला एक प्रभावी उपकरण मानता है।

1.4 अध्ययन की आवश्यकता

चैट जीपीटी के बढ़ते उपयोग को देखते हुए यह आवश्यक हो जाता है कि उच्च शिक्षा में इसके प्रभाव का व्यवस्थित अध्ययन किया जाए। शिक्षकों और छात्रों के दृष्टिकोण को समझे बिना इस तकनीक का प्रभावी और संतुलित उपयोग संभव नहीं है।

यह अध्ययन इस बात को स्पष्ट करने में सहायक होगा कि चैट जीपीटी उच्च शिक्षा की गुणवत्ता, सीखने की प्रक्रिया और शैक्षणिक नैतिकता को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है। इसके निष्कर्ष भविष्य की शैक्षणिक नीतियों के निर्माण में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

डिजिटल क्रांति ने उच्च शिक्षा में ज्ञान की उपलब्धता और पहुँच को व्यापक बनाया है। अब छात्र केवल कॉलेज या विश्वविद्यालय तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे विश्वस्तरीय शैक्षणिक सामग्री, शोध पत्र, ऑनलाइन कोर्स और डिजिटल लाइब्रेरी का लाभ उठा सकते हैं। इस परिवर्तन ने सीखने की प्रक्रिया को अधिक स्व-निर्देशित (Self-directed Learning) और आजीवन अधिगम (Lifelong Learning) की ओर उन्मुख किया है।

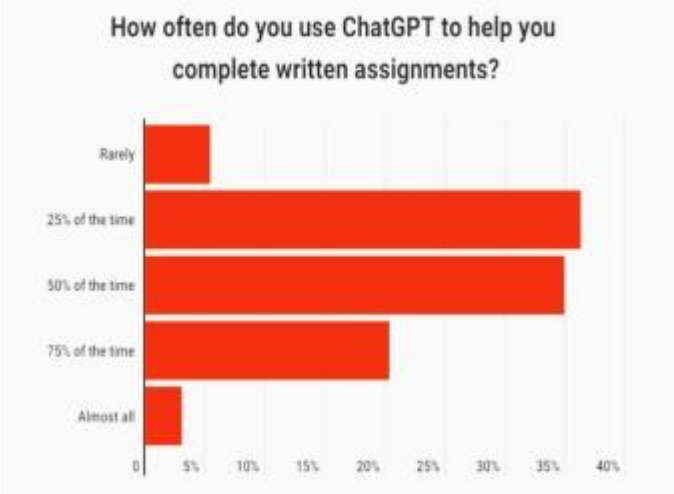

1.5 शिक्षकों और छात्रों के बीच बदलता संबंध

उच्च शिक्षा में तकनीकी नवाचारों के कारण शिक्षक और छात्र के संबंधों में भी परिवर्तन आया है। अब शिक्षक केवल ज्ञान प्रदाता नहीं हैं, बल्कि मार्गदर्शक, परामर्शदाता और सह-शिक्षार्थी की भूमिका निभा रहे हैं। वहीं छात्र भी निष्क्रिय श्रोता न होकर सक्रिय सहभागी बन गए हैं।

चैट जीपीटी जैसे उपकरण इस संबंध को और अधिक सहयोगात्मक बनाते हैं। शिक्षक इसे एक सहायक संसाधन के रूप में देखते हैं, जबकि छात्र इसे त्वरित सहायता के साधन के रूप में अपनाते हैं। हालांकि, यह परिवर्तन तभी सकारात्मक सिद्ध हो सकता है जब दोनों पक्ष इसके उपयोग में संतुलन और विवेक बनाए रखें।

1.6 उच्च शिक्षा में चैट जीपीटी की उपयोगिता

उच्च शिक्षा में चैट जीपीटी की भूमिका बहुआयामी है। इसके प्रमुख उपयोग निम्नलिखित हैं:

- छात्रों के लिए:
  - असाइनमेंट की तैयारी
  - कठिन विषयों की सरल व्याख्या
  - परीक्षा तैयारी में सहायता
  - नोट्स और सार निर्माण
- शिक्षकों के लिए:
  - शिक्षण सामग्री तैयार करना
  - उदाहरण एवं केस स्टडी विकसित करना
  - मूल्यांकन प्रश्नों का प्रारूप बनाना

इस प्रकार, चैट जीपीटी शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाता है।

1.1 सीमाएँ और सावधानियाँ

यद्यपि चैट जीपीटी एक अत्यंत उपयोगी उपकरण है, फिर भी इसकी कुछ सीमाएँ हैं। यह कभी-कभी अपूर्ण या सामान्यीकृत उत्तर दे सकता है। इसके अतिरिक्त, यदि छात्र या शिक्षक इस पर अत्यधिक निर्भर हो जाएँ, तो मौलिक सोच और आलोचनात्मक विश्लेषण प्रभावित हो सकता है।

अतः उच्च शिक्षा में चैट जीपीटी का उपयोग एक सहायक उपकरण के रूप में किया जाना चाहिए, न कि पूर्ण विकल्प के रूप में।

1.2 अध्ययन का उद्देश्य

1. उच्च शिक्षा में चैट जीपीटी के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना
2. उच्च शिक्षा में छात्रों के चैट जीपीटी के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करना

3. शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया पर चैट जीपीटी के प्रभाव का विश्लेषण करना
4. चैट जीपीटी के उपयोग से संबंधित लाभों की पहचान करना
5. चैट जीपीटी के उपयोग से जुड़ी चुनौतियों और समस्याओं का अध्ययन करना

1.3 अध्ययन के उद्देश्यों का महत्व

अध्ययन के ये सभी उद्देश्य न केवल शोध को दिशा प्रदान करते हैं, बल्कि उच्च शिक्षा में नीति-निर्माण, पाठ्यक्रम विकास और तकनीकी एकीकरण के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। इन उद्देश्यों के माध्यम से प्राप्त निष्कर्ष शिक्षकों, छात्रों और शैक्षणिक संस्थानों को चैट जीपीटी के संतुलित एवं प्रभावी उपयोग में सहायता प्रदान करेंगे।

1.4 अनुसंधान प्रश्न

इस अध्ययन में निम्नलिखित प्रमुख अनुसंधान प्रश्न निर्धारित किए गए हैं:

- क्या उच्च शिक्षा के शिक्षक चैट जीपीटी को शिक्षण प्रक्रिया के लिए उपयोगी मानते हैं?
- क्या छात्र चैट जीपीटी को अध्ययन एवं परीक्षा तैयारी में सहायक मानते हैं?
- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया पर चैट जीपीटी का क्या प्रभाव पड़ता है?
- क्या चैट जीपीटी अकादमिक ईमानदारी को प्रभावित करता है?
- चैट जीपीटी के उपयोग से जुड़ी प्रमुख चिंताएँ और चुनौतियाँ क्या हैं?

2. साहित्य समीक्षा

प्रस्तुत अध्ययन "उच्च शिक्षा के शिक्षकों और छात्रों का चैट जीपीटी के प्रति दृष्टिकोण" एक समकालीन एवं तकनीक-आधारित विषय है। अतः इसकी साहित्य समीक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल शिक्षा, उच्च शिक्षा में तकनीकी नवाचार, तथा जनरेटिव एआई (Generative AI) से संबंधित अध्ययनों को सम्मिलित किया गया है। यह समीक्षा राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय दोनों स्तरों पर किए गए अध्ययनों पर आधारित है।

Cotton, D. R. E., Cotton, P. A. & Shipway, J. R. (2023) **इस अध्ययन में यह पाया गया कि छात्र चैट जीपीटी को अध्ययन में अत्यंत उपयोगी मानते हैं, जबकि शिक्षक इसके उपयोग को लेकर सतर्क दृष्टिकोण रखते हैं। अकादमिक ईमानदारी और नकल को प्रमुख चिंता के रूप में चिन्हित किया गया।**

Kasneci, E. et al. (2023) **शोध में यह निष्कर्ष निकाला गया कि चैट जीपीटी छात्रों की सीखने की प्रक्रिया को सहयोगात्मक बनाता है, किंतु इसके अत्यधिक उपयोग से आलोचनात्मक सोच और मौलिकता प्रभावित हो सकती है। संतुलित उपयोग पर विशेष बल दिया गया।**

सिंह, पी. (2023) इस अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया कि एआई आधारित टूल्स के उपयोग से नकल की संभावना बढ़ सकती है। शोधकर्ता ने सुझाव दिया कि उच्च शिक्षा संस्थानों को एआई उपयोग हेतु स्पष्ट नैतिक दिशा-निर्देश तैयार करने चाहिए।

शर्मा, आर. एवं वर्मा, एस. (2022) इस अध्ययन में यह पाया गया कि डिजिटल तकनीक ने भारतीय उच्च शिक्षा में पहुँच और गुणवत्ता दोनों को बढ़ाया है। हालाँकि, डिजिटल साक्षरता और संसाधनों की असमान उपलब्धता एक बड़ी चुनौती बनी हुई है।

Dwivedi, Y. K. et al. (2021) इस अध्ययन में यह बताया गया कि एआई निर्णय-निर्माण और समस्या-समाधान में सहायक सिद्ध हो रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में एआई छात्रों को त्वरित प्रतिक्रिया और शिक्षकों को विश्लेषणात्मक सहायता प्रदान करता है।

Holmes, W., Bialik, M. & Fadel, C. (2019) इस अध्ययन में एआई के शैक्षणिक लाभों के साथ-साथ इसके नैतिक एवं सामाजिक प्रभावों पर भी प्रकाश डाला गया। शोधकर्ताओं ने पाया कि एआई शिक्षण को अधिक प्रभावी बना सकता है, किंतु इसके लिए स्पष्ट नीतियों और दिशानिर्देशों की आवश्यकता है।

Zawacki-Richter, O., Marín, V. I., Bond, M. & Gouverneur, F. (2019) इस व्यवस्थित समीक्षा में यह निष्कर्ष निकाला गया कि उच्च शिक्षा में एआई का प्रयोग मुख्यतः छात्र सहायता, स्वचालित मूल्यांकन और अधिगम विश्लेषण में किया जा रहा है। अध्ययन में यह भी बताया गया कि शिक्षक की भूमिका ज्ञान प्रदाता से मार्गदर्शक की ओर परिवर्तित हो रही है।

Luckin, R., Holmes, W., Griffiths, M. & Forcier, L. B. (2016) इस अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षा में व्यक्तिगत अधिगम को बढ़ावा देती है। एआई आधारित टूल्स छात्रों की सीखने की शैली को समझकर उन्हें अनुकूल सहायता प्रदान करते हैं। लेखकों ने स्पष्ट किया कि एआई शिक्षक का विकल्प नहीं, बल्कि सहायक उपकरण है।

3. शोध पद्धति

इस अध्याय में शोध की प्रकृति, अध्ययन क्षेत्र, जनसंख्या एवं नमूना, शोध उपकरण, डेटा संग्रह की प्रक्रिया, स्कोरिंग विधि तथा सांख्यिकीय विश्लेषण का विस्तृत वर्णन किया गया है। विशेष रूप से, इस अध्ययन में *ATCGPTS-TKGA (Attitude Towards ChatGPT Scale)* **नामक मानकीकृत शोध उपकरण का प्रयोग किया गया है, जो** National Psychological Corporation, **आगरा द्वारा प्रकाशित है ।**

3.1 शोध की प्रकृति :

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध *(Descriptive Survey Research)* है। यह शोध मात्रात्मक (Quantitative) दृष्टिकोण पर आधारित है, क्योंकि इसमें प्रश्नावली के माध्यम से संख्यात्मक डेटा एकत्र किया गया है।

3.2 अध्ययन क्षेत्र:

यह अध्ययन **उच्च शिक्षा क्षेत्र** से संबंधित है। अध्ययन का क्षेत्र लखनऊ विश्वविद्यालय (LU) से संबद्ध महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालय परिसरों तक सीमित रखा गया है। इसमें स्नातकोत्तर (PG) स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं उच्च शिक्षा में कार्यरत शिक्षक सम्मिलित किए गए हैं।

3.3 अध्ययन की जनसंख्या:

लखनऊ विश्वविद्यालय एवं उससे संबद्ध महाविद्यालयों के स्नातकोत्तर (PG) स्तर के छात्र, उच्च शिक्षा में कार्यरत शिक्षक

3.4 नमूना एवं नमूना चयन विधि

इस शोध में नमूना चयन हेतु यादृच्छिक नमूना विधि *(Random Sampling Method)* का प्रयोग किया गया, जिससे प्रत्येक उत्तरदाता को समान अवसर प्राप्त हो सके।

नमूने में शामिल किए गए:

- उच्च शिक्षा के शिक्षक, स्नातकोत्तर स्तर के छात्र

3.5 शोध उपकरण:

प्रस्तुत अध्ययन में डेटा संग्रह हेतु एक मानकीकृत शोध उपकरण का प्रयोग किया गया है, जिसका विवरण निम्नलिखित है: ATCGPTS-TKGA (Attitude towards ChatGPT Scale) यह स्केल K. Thangavel एवं A. Gangadharan द्वारा विकसित किया गया है तथा National Psychological Corporation, आगरा द्वारा प्रकाशित है। यह स्केल चैट जीपीटी के प्रति उत्तरदाताओं के दृष्टिकोण का मापन करने के लिए प्रयोग किया जाता है।

3.6 डेटा विश्लेषण की विधि:

एकत्रित डेटा का विश्लेषण वर्णनात्मक सांख्यिकी (Descriptive Statistics) के माध्यम से किया गया। इसके अंतर्गत: प्रतिशत, औसत (Mean), सामान्य प्रवृत्तियों का विश्लेषण का प्रयोग किया गया, जिससे शिक्षकों और छात्रों के दृष्टिकोण की स्पष्ट व्याख्या की जा सके।

4. डेटा विश्लेषण एवं व्याख्या

4. 1 उत्तरदाताओं की प्रोफ़ाइल

तालिका 4.1 : उत्तरदाताओं का वितरण (N = 100)

श्रेणी	संख्या	प्रतिशत
शिक्षक	40	40%
छात्र (PG)	60	60%
कुल	100	100%

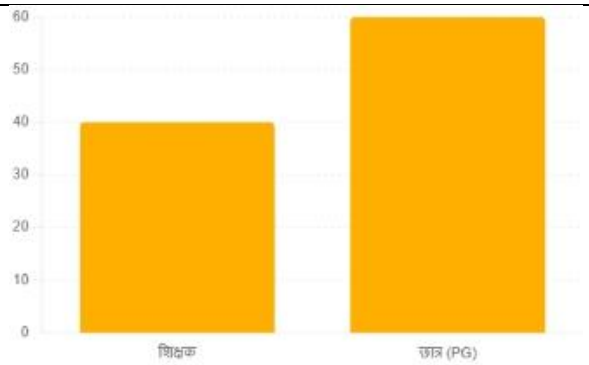

व्याख्या: नमूने में छात्रों की संख्या अधिक है, जो उच्च शिक्षा में चैट जीपीटी के प्रत्यक्ष उपयोग को बेहतर रूप से प्रतिबिंबित करती है।

4. 2 शैक्षणिक लाभ व उत्पादकता

तालिका 4.2 : शैक्षणिक लाभ

प्रतिक्रिया	संख्या	प्रतिशत
Strongly Agree	41	41%
Agree	39	39%
Undecided	8	8%
Disagree	9	9%
Strongly Disagree	3	3%
कुल	100	100%

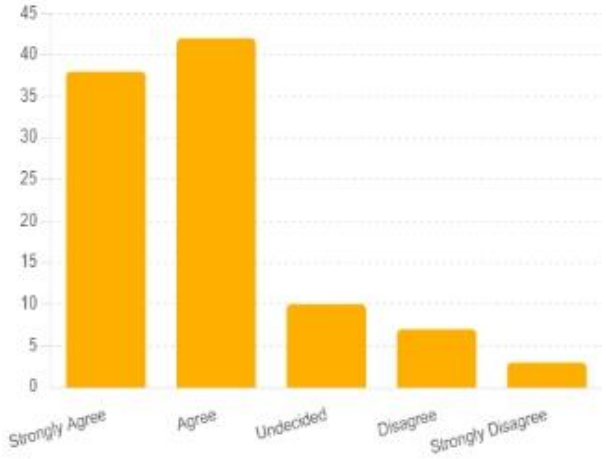

व्याख्या: अधिकांश उत्तरदाता मानते हैं कि चैट जीपीटी सीखने, शोध, निर्देश-दक्षता और वर्कलोड घटाने में सहायक है।

4. 3 गोपनीयता, कठिनाइयाँ एवं समग्र संतुष्टि

तालिका 4.3 : गोपनीयता व संतुष्टि

प्रतिक्रिया	संख्या	प्रतिशत
Strongly Agree	30	30%
Agree	34	34%
Undecided	14	14%
Disagree	13	13%
Strongly Disagree	9	9%
कुल	100	100%

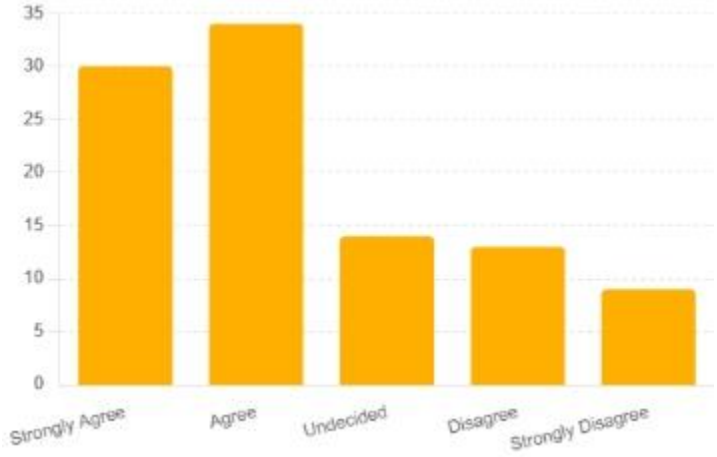

व्याख्या: गोपनीयता व विश्वसनीयता पर कुछ चिंता के बावजूद समग्र संतुष्टि सकारात्मक है।

4.4 दृष्टिकोण स्तर

कुल स्कोर-आधारित दृष्टिकोण स्तर

30 कथन × 5 अंक = **अधिकतम 150**। व्यावहारिक व्याख्या हेतु स्तर निर्धारण:

- **उच्च सकारात्मक**: ≥ 110
- **मध्यम**: 90-109
- **निम्न/नकारात्मक**: < 90

तालिका 4.4 : दृष्टिकोण स्तर

स्तर	संख्या	प्रतिशत
उच्च सकारात्मक	52	52%
मध्यम	33	33%
निम्न/नकारात्मक	15	15%
कुल	**100**	**100%**

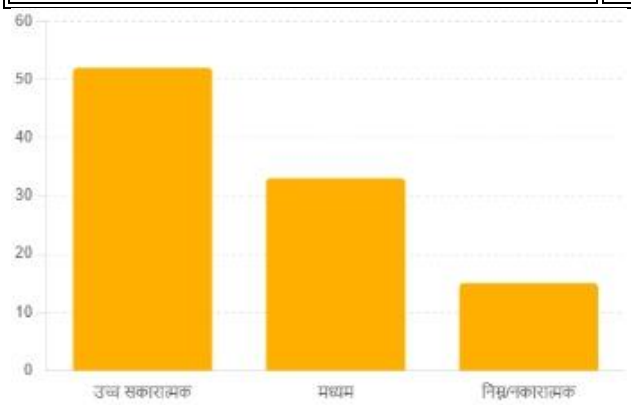

व्याख्या: आधे से अधिक उत्तरदाताओं का दृष्टिकोण उच्च सकारात्मक है।

4.5 समेकित व्याख्या

- **स्वीकार्यता उच्च**: परिचय, सहजता और उपयोगिता पर मजबूत सहमति।
- **शैक्षणिक लाभ स्पष्ट**: सीखने, शोध और उत्पादकता में सहायता।
- **संतुलित चेतावनी**: नैतिकता, आलोचनात्मक सोच और गोपनीयता पर सावधानी।
- **व्यावहारिक अपनाने की इच्छा**: कक्षा-एकीकरण और समय-बचत को समर्थन।

4.6 **अध्याय का निष्कर्ष**

डेटा विश्लेषण से स्पष्ट है कि 100 उत्तरदाताओं में चैट जीपीटी के प्रति समग्र दृष्टिकोण सकारात्मक है। हालांकि, नैतिक दिशा-निर्देश, आलोचनात्मक सोच का संरक्षण और डेटा-गोपनीयता सुनिश्चित करना आवश्यक है। यह निष्कर्ष आगे के निष्कर्ष/सुझाव अध्याय के लिए ठोस आधार प्रदान करता है।

2. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध "उच्च शिक्षा के शिक्षकों और छात्रों का चैट जीपीटी के प्रति दृष्टिकोण" वर्तमान डिजिटल एवं एआई-आधारित शैक्षणिक परिवेश में अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होता है। इस अध्ययन ने यह स्पष्ट कर दिया है कि चैट जीपीटी उच्च शिक्षा में एक प्रभावी और सहायक शैक्षणिक उपकरण के रूप में उभर रहा है।

अध्ययन के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि शिक्षक और छात्र दोनों चैट जीपीटी की उपयोगिता को स्वीकार कर रहे हैं। यह उपकरण न केवल सूचना की त्वरित उपलब्धता सुनिश्चित करता है, बल्कि सीखने की प्रक्रिया को अधिक संवादात्मक और आत्मनिर्भर भी बनाता है।

हालाँकि, अध्ययन यह भी इंगित करता है कि चैट जीपीटी का उपयोग तभी लाभकारी सिद्ध होगा जब इसे संतुलित, नैतिक और विवेकपूर्ण ढंग से अपनाया जाए। अत्यधिक निर्भरता छात्रों की मौलिक सोच और आलोचनात्मक क्षमता को प्रभावित कर सकती है।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि चैट जीपीटी उच्च शिक्षा का भविष्य अवश्य है, किंतु यह शिक्षक का स्थान नहीं ले सकता। मानव शिक्षक का मार्गदर्शन, नैतिक मूल्य और अनुभव सदैव शिक्षा की आधारशिला बने रहेंगे।

3. संदर्भ सूची

- Davis, F. D. (1989). *Perceived usefulness, perceived ease of use, and user acceptance of information technology*. MIS Quarterly, 13(3), 319-340.
- Holmes, W., Bialik, M., & Fadel, C. (2019). *Artificial intelligence in education*. Boston: Center for Curriculum Redesign.
- Kasneci, E., et al. (2023). *ChatGPT for good?*. Learning and Individual Differences.
- UNESCO. (2023). *Guidance on generative AI in education and research*. Paris: UNESCO.

- शर्मा, आर., एवं वर्मा, एस. (2022). *उच्च शिक्षा में डिजिटल तकनीक की भूमिका.* भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका।
- Davis, F. D. (1989). Perceived usefulness, perceived ease of use, and user acceptance of information technology. MIS Quarterly.
- Luckin, R. et al. (2016). Intelligence unleashed. Pearson.
- Holmes, W., Bialik, M., & Fadel, C. (2019). Artificial intelligence in education. CCR.
- Zawacki-Richter, O. et al. (2019). AI in higher education. IJET.
- Dwivedi, Y. K. et al. (2021). AI perspectives. IJIM.
- Cotton, D. R. E. et al. (2023). ChatGPT in higher education.
- Kasneci, E. et al. (2023). ChatGPT for good?
- UNESCO. (2023). Guidance on generative AI.
- OpenAI. (2023). ChatGPT documentation.
- Selwyn, N. (2019). Should robots replace teachers?
- Kumar, A. (2022). AI in Indian education.
- Sharma, R. (2022). Digital education in India.
- Singh, P. (2023). AI ethics in education.
- OECD. (2021). AI and the future of education.
- Rao, S. (2021). Technology acceptance in education.
- Mishra, P. (2020). Digital pedagogy.
- Kumar, V. (2023). AI tools in higher education.
- World Economic Forum. (2022). AI in learning.
- Agarwal, N. (2021). ICT in Indian universities.
- Bansal, S. (2020). Ethics of AI.
- Brown, T. et al. (2020). Language models.
- Floridi, L. (2019). Ethics of AI.
- Ng, A. (2020). AI education.
- National Education Policy. (2020). Government of India.
- Thangavel, K., & Gangadharan, A. (2005). ATCGPTS-TKGA Manual.